# स्नातकस्तरीय NEP 2020
# चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम का प्रारूप

## विषय–पालि

## PAL-F

संस्कृत एवं प्राकृतभाषा विभाग,

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,

गोरखपुर

2024

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

## विषय—पालि (स्नातक स्तर—3+1 पाठ्यक्रम)

| | | |
|---|---|---|
| | **बी० ए० प्रथम वर्ष** | |
| | **प्रथम अधिसत्र—** | **6 क्रेडिट** |
| PAL-101F | पालि साहित्य का इतिहास एवं तिपिटक | |
| | **द्वितीय अधिसत्र—** | **6 क्रेडिट** |
| PAL-102F | पालि भाषा का सामान्य परिचय | |
| | **बी० ए० द्वितीय वर्ष** | |
| | **तृतीय अधिसत्र—** | **6 क्रेडिट** |
| PAL-201F | सुत्त संगहो | |
| | **चतुर्थ अधिसत्र—** | **6 क्रेडिट** |
| PAL-202F | पालि गद्य संगहो | |
| PAL-203F | Research Project /Dissertation/Intership/Field work Survey | **3 क्रेडिट** |
| | **बी० ए० तृतीय वर्ष** | |
| | **पंचम अधिसत्र—** | **05+05=10 क्रेडिट** |
| PAL-301F | पालि व्याकरण एवं अनुवाद | 05 **क्रेडिट** |
| PAL-302F | पालि काव्यशास्त्र | 05 **क्रेडिट** |
| | **षष्ठ अधिसत्र—** | **05+05=10 क्रेडिट** |
| PAL-303F | बौद्ध दर्शन | 05 **क्रेडिट** |
| PAL-304F | थेरवाद | 05 **क्रेडिट** |

# UG Honors

| सेमेस्टर के अनुसार प्रश्नपत्रों के शीर्षक तथा निर्धारित क्रेडिट | | | |
|---|---|---|---|
| वर्ष | कोर्स कोड | कोर्स का शीर्षक | क्रेडिट |
| प्रथम वर्ष | | | |
| | **PAL- 401F** | थेरवाद एवं बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– I | 04 |
| | **PAL- 402F** | थेरवाद एवं बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– II | **04** |
| | **PAL- 403F** | *मिलिन्दपञ्हो* – I | **04** |
| | **PAL- 404F** | *मिलिन्दपञ्हो* – II | **04** |
| | **PAL- 405F** | व्याकरण एवं निबन्ध | **04** |
| द्वितीय वर्ष | | | |
| | **PAL- 406F** | पालि अभिधम्म– I | **04** |
| | **PAL- 407F** | पालि अभिधम्म– II | **04** |
| | **PAL- 408F** | विसुद्धिघम्म– I | **04** |
| | **PAL- 409F** | विसुद्धिघम्म– II | **04** |
| | **PAL- 410F** | पालि दार्शनिक प्रस्थान | **04** |
| | | | |

# UG Honors With Research

| सेमेस्टर के अनुसार प्रश्नपत्रों के शीर्षक तथा निर्धारित क्रेडिट | | | |
|---|---|---|---|
| वर्ष | कोर्स कोड | कोर्स का शीर्षक | क्रेडिट |
| | | | |
| | **PAL- 401F** | थेरवाद एवं बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– I | 04 |
| | **PAL- 402F** | थेरवाद एवं बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– II | 04 |
| | **PAL- 403F** | *मिलिन्दपञ्हो* – I | 04 |
| | **PAL- 404F** | *मिलिन्दपञ्हो* – II | 04 |
| | **PAL- 405F** | व्याकरण एवं निबन्ध | 04 |
| | **PAL- 406F** | पालि विज्ञान | 04 |
| | **PAL- 407F** | घम्मसंगणि | 04 |
| | **PAL- 408F** | रिसर्च प्रोजेक्ट | 12 |

विषय- *पालि* ( स्नातक स्तर )

## Programme Outcomes ( POs)

POs-1 विद्यार्थियों को *पालि भाषा में* लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।

POs-2 सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत *प्रवीणता* प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।

POs-3 आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगे।

POs-4 नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में *समर्थ* होंगे।

## Programme Specific Outcomes ( PSO)

PSO-1 *लोक भाषा के रूप में छात्र पालि* भाषा के *महत्त्व एवं* उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने-समझने योग्य होंगे।

PSO-2 *पालि साहित्य की विभिन्न विधाओं पाठ, गाथा एवं व्याकरण से सुपरिचित हो कर पालि भाषा के विशेषज्ञ बन सकेंगे।*।

PSO-3 *पालि तिपिट्टक, व्याकरण थेरवाद बौद्ध–दर्शन अभिधम्मत्थसंगहो, विसुद्धिमग्गो इत्यादि के विषय में पूर्ण रूप से जान सकेंगे।*

PSO-4 *पालि साहित्य में निहित नैतिकता एवं आध्यात्मिकता को अनुभूव कर भारतीय संस्कृति की व्यापकता एवं उदारता को विश्वस्तर पर फैलाने में समर्थ होंगे।*

PSO-5 *संघ आचार व्यवहार, अहिंसा करूणा, त्याग इत्यादि भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को ज्ञान कर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगें।*

PSO-6 समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में *पालि* साहित्य में निबद्ध सर्वांङ्गीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा।

# पाठ्यक्रम विवरण

| Year: First | | Semester: I |
|---|---|---|
| PAL-101F | *कोर्स* 1 - पालि साहित्य का इतिहास एवं तिपिटक | *क्रेडिट 06* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** विद्यार्थी पालि साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर पालि साहित्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे |

**CO-2** *वे तिपिट्टक के भाषा सौन्दर्य एवं उसमें निहित ज्ञानराशि से परिचित हो सकेंगे।*

| Unit /इकाई | Topics /पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | पालि भाषा का उद्भव, विकास एवं पालि प्रदेश |
| II | सुत्तपिटक परिचय |
| III | विनयपिटक परिचय |
| IV | अभिधम्मपिटक परिचय |
| V | नवांगसत्थुसासन |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००

उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, २०१०

काश्यप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम-निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, १९५८

धर्मरक्षित, भिक्षु , मज्झिम निकाय, महाबोधिसभा, वाराणसी, १९६४ (द्वितीय संस्करण)

धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)

सराओ, के० टी० एस०, धम्मपद: एक व्युत्तिपरक अनुवाद, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१५

सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)

शास्त्री, द्वारिकादास, दीघ निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, मज्झिम निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, संयुत्त निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००८।

(1889). *Dīgha-Nikāya*. Vol. I. Carpenter, T.W. and Rhys Davids J.E. (ed.). London: The PAL-Text Society.

(1904). *Saṁyutta Nikāya*. Vol.VI. Feer, L. (ed.). London: The PAL-Text Society.

Hinuber, O. v. (1996). *A Handbook of PAL-Literature*. Berlin: Walter de Gruyter.

Law, B. C. (2000). *A History of PAL-Literature*. Varanasi: Indica Books.

Mahendra, Anagārika, (2017).*TherīgathāpāIi: A Contemporary Translation*, Dhamma Publishers, MA, USA.

Sarao, K T S, (2009), *Dhammapada: A Translators Guide*: Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi.

Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913).*Suttanipāta.* London: PAL-Text Society.

The Middle Length Discourses of the Buddha: A New Translation of the Majjhima Nikāya. (1995). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdon Publications.

The Connected Discourses of the Buddha. (2020). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdom Publications.

Walshe, M. (1995). *The Long Discourses of the Buddha: A Translation of the Dīgha Nikāya*.
Boston: Wisdom Publication.


**नोट:** पालि मूल तिपिटक (देवनागरी) के लिए नालन्दा संकलन दर्शनीय हैं।

| Year: First | | Semester: II |
|---|---|---|
| **PAL- 102F** | ***कोर्स 2* - पालि भाषा सामान्य परिचय** | ***क्रेडिट 06*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** छात्रों को पालि भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान हो सकेगा।

**CO-2** इस पाठ्यक्रम से छात्रों में उच्चस्तरीय संस्कृत साहित्य पढ़ने के प्रति रूचि उत्पन्न होगी।

**CO-3** छात्र अपने दैनिक जीवन में पालि का प्रयोग कर सकेंगे।

**CO-4** छात्र अपने व्यक्तित्व का विकास करने में समर्थ होंगे।

| **Unit /इकाई** | **Topics /पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | पालि वर्णमाला स्वर व्यंजन एवं संयुक्ताक्षर |
| **II** | शब्दरूप–बुद्ध, भिक्खु, मुनि, रत्ति, नदी, चित्त |
| **III** | धातुरूप–भू, पठ्, भुज्, कुध्, लिख् |
| **IV** | कारक एवं विभक्ति |
| **V** | सन्धि–परिचय |
| **VI** | पुरूष, वचन, लिंग |
| **VII** | |

सतत मूल्यांकन-

अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी परीक्षा

लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय)

संस्तुत ग्रंथ /***अनु*शंसित अध्ययन–सामग्री**


- बालावतार, सम्पादक स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बुद्ध भारती, वाराणसी, 2007
- पालिव्याकरण–भिक्षु धर्मरक्षित, ज्ञानमण्डल प्राइवेट लिमिटेड, वाराणसी, संवत् 2028

| Year: Second | | Semester: I |
|---|---|---|
| **PAL-201F** | *कोर्स* 3 – **सुत्त संगहो** | *क्रेडिट 06* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** विद्यार्थी पालि साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर पालि साहित्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे |

**CO-2** *वे तिपिट्टक के भाषा सौन्दर्य एवं उसमें निहित ज्ञानराशि से परिचित हो सकेंगे।*

**CO-3** *मज्झिम निकाय एवं संयुक्त निकाय की विषय वस्तु से परिचित होकर तथागत के धम्मचक्कपवत्तन से प्रेरणा ले सकेंगे।*

**CO-4** *वे थेरीगाथा से परिचित हो जाएंगे।*

| Unit /इकाई | Topics /पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | सुत्तनिपात: उरग-सुत्त, धनिय-सुत्त, और कसिभारद्वाज-सुत्त। |
| II | धम्मपद: यमक-वग्ग, अप्पमाद-वग्ग, और चित्त-वग्ग। |
| III | धम्मचक्कपवत्तन सुत्त (संयुत्त निकाय 56.11)। |
| IV | महापरिनिब्बान सुत्त (दीघ निकाय 16)। |
| V | थेरीगाथा प्रथम वर्ग। |

सतत मूल्यांकन-

4. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
5. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
6. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००

उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, २०१०

काश्यप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम-निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, १९५८

धर्मरक्षित, भिक्षु , मज्झिम निकाय, महाबोधिसभा, वाराणसी, १९६४ (द्वितीय संस्करण)

धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)

सराओ, के॰ टी॰ एस॰, धम्मपद: एक व्युत्तिपरक अनुवाद, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१५

सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)

शास्त्री, द्वारिकादास, दीघ निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, मज्झिम निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, संयुत्त निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००८।

(1889). *Dīgha-Nikāya*. Vol. I. Carpenter, T.W. and Rhys Davids J.E. (ed.). London: The PAL-Text Society.

(1904). *Saṁyutta Nikāya*. Vol.VI. Feer, L. (ed.). London: The PAL-Text Society.

Hinuber, O. v. (1996). *A Handbook of PAL-Literature*. Berlin: Walter de Gruyter.

Law, B. C. (2000). *A History of PAL-Literature*. Varanasi: Indica Books.

Mahendra, Anagārika, (2017).*TherīgathāpāIi: A Contemporary Translation*, Dhamma Publishers, MA, USA.

Sarao, K T S, (2009), *Dhammapada: A Translators Guide*: Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi.

Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913).*Suttanipāta.* London: PAL-Text Society.

The Middle Length Discourses of the Buddha: A New Translation of the Majjhima Nikāya. (1995). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdom Publications.

The Connected Discourses of the Buddha. (2020). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdom Publications.

Walshe, M. (1995). *The Long Discourses of the Buddha: A Translation of the Dīgha Nikāya*.
Boston: Wisdom Publication.


**नोट:** पालि मूल तिपिटक (देवनागरी) के लिए नालन्दा संकलन दर्शनीय हैं।

| Year: Second | | Semester: II |
|---|---|---|
| PAL-202F | ***कोर्स 4*** - पालि गद्य संगहो | ***क्रेडिट 06*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *पालि* गद्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे |

**CO-2** *पालि* वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा |

| **Unit / इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | मज्झिम निकाय महाराहुलोवाद, चूलमालुक्य सुत्त। |
| **II** | उपालिदारकवत्थु, सुमेध कथा |
| **III** | शश जातक, बक जातक, वानरिन्द जातक |
| **IV** | अरियपरियेसना सुत्त (मज्झिम निकाय 26)। |
| **V** | बुद्ध के प्रमुख श्रावक: सारिपुत्त, मोग्गल्लान, और आनन्द। |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००

उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, २०१०

काश्यप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम-निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, १९५८

धर्मरक्षित, भिक्षु , मज्झिम निकाय, महाबोधिसभा, वाराणसी, १९६४ (द्वितीय संस्करण)

धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)

सराओ, के० टी० एस०, धम्मपद: एक व्युत्तिपरक अनुवाद, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१५

सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)

शास्त्री, द्वारिकादास, दीघ निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, मज्झिम निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, संयुत्त निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००८।


**नोट:** पालि मूल तिपिटक (देवनागरी) के लिए नालन्दा संकलन दर्शनीय हैं।

| Year: Second | | Semester: II |
|---|---|---|
| PAL-203F | ***कोर्स 5*** - Research Project /Dissertation/Intership/Field work Survey | ***क्रेडिट 03*** |

| Year : Third | | Semester: I |
|---|---|---|
| PAL-301F | *कोर्स* 1 - पालि व्याकरण एवं अनुवाद | *क्रेडिट 05* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पालि–व्याकरण से परिचित हो सकेंगे एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद कर सकेंगे।*

**CO-2** *छात्रों को पालि की विभक्तियों, लिङो तथा वचनों सहित शब्दरूपों का ज्ञान हो सकेगा।*

**CO-3** *वे क्रियाओं के गण, काल, पुरूष, वचन इत्यादि का ज्ञान प्राप्त कर धातुरूपों को ज्ञान सकेंगे।*

**CO-4** *उन्हें पालि–भाषा के उपसर्गों, प्रत्ययों एवं अव्ययों का भी ज्ञान हो सकेगा।*

| **Unit / इकाई** | **Topics /पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | विभत्ति, लिंग, वचन, शब्द रूप, संज्ञा, अकारान्त पुल्लिंग शब्द: धम्म, संघ, चाग, वायाम, यक्ख, ओघ, रूक्ख, गन्धब्ब, आलोक। |
| **II** | क्रिया, गण विचार, काल, पुरुष, पच्चुपन्न काल धातु: पच, अस, कन्द, कम्प, जि, दह, दा, पा, कत, गह, छिद, गा, घा, रुच, गिल, तुद, नुद, लू, थु, वि, की, गि, वु, सु, सक, मन, कर, अज्ज, पूज, वन्द, और पाल। |
| **III** | शब्द रूप, संज्ञा और विशेषण: फल, पदुम, दुक्ख, रूप, मुनि, इसि, पाणि, दधि, अक्खि, भिक्खु, हेतु, आयु, चक्खु, गाथा, करुणा, पीति, बोधि, इत्थी, नदी, धेनु, यागु, जम्बू, वधू, गो, और वित्तगो, भगवन्तु, चक्खुमन्तु।<br>शब्द रूप, सर्वनाम (तीनो लिंग में): सब्ब, किं, य, और त।<br>शब्द रूप, संख्यावाची: एक, द्वि, ति, चतु, पंच, सत, उभ। |
| **IV** | क्रिया (सभी गणों में): अनागत काल, अनुज्ञा (पंचमी), विधिलिंग (सत्तमी), अतीत— परोक्खा, हिय्यत्तनी, अज्जतनी, कालातिपत्ति। |
| **V** | उपसग्ग पच्चय एवं *अन्यय एवं अनुवाद* |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


धर्मरक्षित, भिक्षु, पालि व्याकरण, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, २००७ (पुनर्मुद्रण)

लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३

शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६

Buddhadatta, A. P. (1999). *The New PAL-Ni Course* (Vol. I & II). Dehiwala, Sri Lanka: Buddhist Cultural Centre.

Silva, L. D. (2008). *PAL-Ni Primer*. Igatpuri, India: Vipassana Research Institute.

Karunatillake, J. W. (2017). *A New Course in Reading PAL-Ni* (6th ed.). New Delhi: Motilal Banarsidass.


***

| Year : Third | | Semester: I |
|---|---|---|
| PAL-302F | ***कोर्स*** 7- पालि काव्यशास्त्र | ***क्रेडिट 05*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पालि–काव्यशास्त्र से परिचित हो सकेंगे।*

**CO-2** *छात्रों को पालि के अलंकारो छंदों, गुण तथा रस से परिचित हो सकेंगे*

| **Unit / इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | उपमा, रूपक, दीपक, अत्थन्तरन्यासों, व्यतिरेकों, भमो, सेमावुत्ति अलंकार |
| **II** | विभावना, परिकल्पना निदस्सना, एकावली, आवुत्ति, विसेसो, सिलेसो |
| **III** | छंद–वुत्तोदय |
| **IV** | गुण तथा रस निरूपण–सुबोधालंकार |
| **V** | |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


धर्मरक्षित, भिक्षु, पालि व्याकरण, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, २००७ (पुनर्मुद्रण)

लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३

शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६

Buddhadatta, A. P. (1999). *The New PAL-Ni Course* (Vol. I & II). Dehiwala, Sri Lanka: Buddhist Cultural Centre.

Silva, L. D. (2008). *PAL-Ni Primer*. Igatpuri, India: Vipassana Research Institute.

Karunatillake, J. W. (2017). *A New Course in Reading PAL-Ni* (6th ed.). New Delhi: Motilal Banarsidass.


***

| Year : Third | | Semester: II |
|---|---|---|
| PAL-303F | *कोर्स 8-* **बौद्ध दर्शन** | *क्रेडिट 05* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* **बौद्ध दर्शन** *से परिचित हो सकेंगे।*

| **Unit / इकाई** | **Topics /पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय |
| **II** | चार प्रस्थान–वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार एवं माध्यमिक, चार आर्यसत्य |
| **III** | प्रतीत्यसमुत्पाद, अष्टांगिकमार्ग, अनित्य–अनात्म |
| **IV** | वसुबंध, असंग, आर्यदेव, नागार्जुन |
| **V** | |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

धर्मरक्षित, भिक्षु, पालि व्याकरण, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, २००७ (पुनर्मुद्रण)
लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३
शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६
Buddhadatta, A. P. (1999). *The New PAL-Ni Course* (Vol. I & II). Dehiwala, Sri Lanka: Buddhist Cultural Centre.
Silva, L. D. (2008). *PAL-Ni Primer*. Igatpuri, India: Vipassana Research Institute.
Karunatillake, J. W. (2017). *A New Course in Reading PAL-Ni* (6th ed.). New Delhi: Motilal Banarsidass.

***

| Year : Third | | Semester: II |
|---|---|---|
| **PAL- 304F** | ***कोर्स 9 -* थेरवाद** | ***क्रेडिट 05*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1**

| **Unit / इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | पालि अनुपिटक साहित्य: मिलिंदपञ्हो, नेतिप्पकरण, और पेटकोपदेस का परिचय |
| **II** | पालि अट्ठकथाकार: बुद्धघोस, बुद्धदत्त, और धम्मपाल |
| **III** | सुत्तनिपात—मंगलसुत्त, वासेट्ठसुत्त |
| **IV** | राजोवाद जातक, मखादेव जातक, सीलानुसंस जातक |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००

धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)तिवारी, महेश, पालिपाठसंगहो,

सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)

शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, 1993.

Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913). *Suttanipāta.* London: PAL-Text Society.

Analayo, B. (2003). *Satipaṭṭhāna: The Direct Path to Realization*. Birmingham: Windhorse Publication

Endo, T. (2013). *PAL-Commenterial Literature*. Hong Kong: Centre of Buddhist Studies.

Gethin, R. (1998). *The Foundations of Buddhism*. Oxford: Oxford University Press.

Hinuber, O. v. (1996). *A Handbook of PAL-Literature*. Berlin: Walter de Gruyter.

Law, B. C. (2000). *A History of PAL-Literature*. Varanasi: Indica Books.

Narada, T. (2006). *The Buddha and His Teachings*. Mumbai: Jaico Publishing House.

Narada, T. (2017). *Buddhism in a Nutshell*. USA: BPS Pariyatti Edition

William, Hart. (2009). *The Art of Living: Vipassana Meditation: As Taught by S. N. Goenka*. HarperOne


**Technical References**

Digital PAL-Reader, Windows and Android Version

PAL-Tipitaka, CD-ROM, VRI, Igatpuri, Maharashtra

SuttaCentral:https://suttacentral.net/

Accesstoinsight: https://www.accesstoinsight.org/

https://www.vridhamma.org/ [for reading materials on Vipassana and Vipassana related information]

***

# UG Honors

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| PAL-401F | *कोर्स 10* - थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– I | *क्रेडिट 04* |

**Course outcomes:** अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र चारों* बौद्ध संगीतियों एवं उनके निष्कर्षों से परिचित हो सकेंगे।

**CO-2** इससे छात्र स्थविरवाद और महासांधिक से परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म के अवदान से परिचित हो सकेंगे।

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | प्रथम एवं द्वितीय बौद्ध संगीति |
| II | बौद्ध निकाय (सम्प्रदाय): स्थविरवाद और महासांधिक |
| III | सम्राट अशोक और तृतीय बौद्ध संगीति |
| IV | श्रीलंका में चतुर्थ बौद्ध संगीति और तिपिटक का संकलन |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


बापट, पी०बी०, बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, प्रकाशन विभाग, 1956, दिल्ली।

Bareau André. (2013). *The Buddhist Schools of Small Vehicle*. London: The Buddhist Society Trust.

Bapat P. B. (1956). *2500 Years of Buddhism*. New Delhi: Publication Division, Govt. of India.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Kumar, B. (2019). *Dīpavaṃso*. Delhi: Buddhist World Press.

Kumar B. & Kumar U. (2021). *Saṅgītiyavaṃso*.Delhi: Aditya Prakashan.

Silva, Lily De. "The Paritta Ceremony of Sri Lanka: Its Antiquity and Symbolism." In Buddhist Thought & Culture, by David J. Kalupahana, 139-150. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, 2001.


***

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| **PAL-402F** | ***कोर्स 11-*** **थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– II** | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* बौद्ध धर्म के श्रीलंका , म्यांमार, थाईलैण्ड, कम्बोडिया और लाओस में प्रचार–प्रसार से परिचित हो सकेंगे।

**CO-2** इससे छात्र पालि के वंस साहित्य से परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र दक्षिण और दक्षिणपूर्व बौद्ध देशों के समारोहों, उपोसथ आदि से परिचित हो सकेंगें।

| **Unit /इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| I | थेरवाद बौद्ध धर्म का श्रीलंका, म्यांमार, और थाईलैंड में प्रचार और प्रसार |
| II | थेरवाद बौद्ध धर्म का कम्बोडिया, और लाओस में प्रचार और प्रसार |
| III | पालि वंस साहित्य का परिचय |
| IV | दक्षिण और दक्षिण-पूर्व बौद्ध देशों में समारोह (Ceremonies): परित्राण पाठ, उपोसथ, इत्यादि। |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुतग्रंथ-


बापट, पी॰बी॰, बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, प्रकाशन विभाग, 1956, दिल्ली।

Bareau André. (2013). *The Buddhist Schools of Small Vehicle*. London: The Buddhist Society Trust.

Bapat P. B. (1956). *2500 Years of Buddhism*. New Delhi: Publication Division, Govt. of India.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Kumar, B. (2019). *Dīpavaṃso*. Delhi: Buddhist World Press.

Kumar B. & Kumar U. (2021). *Saṅgītiyavaṃso*.Delhi: Aditya Prakashan.

Silva, Lily De. "The Paritta Ceremony of Sri Lanka: Its Antiquity and Symbolism." In Buddhist Thought & Culture, by David J. Kalupahana, 139-150. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, 2001.


***

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| PAL-403F | ***कोर्स 12*** - द्वितीय प्रश्न पत्र – मिलिंदपञ्हो - I | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संवाद शैली में* बौद्ध दर्शन के तत्वों को जानने में समर्थ होंगे।

**CO-2** इससे बाहिर–कथा के विभिन्न सोपानों से परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र लक्खणपञ्हो के अन्तर्गत महावग्ग से परिचित हो सकेंगे।

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 01-09) |
| II | मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 10-17) |
| III | मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 18-28) |
| IV | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (महावग्ग) |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, मिलिंदपञ्हपालि,बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
वाडेकर, आर॰ डी॰, मिलिंदपञ्हो, मुम्बई विद्यापीठ, २०११।

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| PAL-404F | ***कोर्स 13 -*** द्वितीय प्रश्न पत्र - मिलिंदपञ्हो - II | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र लक्खणपञ्हो के अन्तर्गत अद्धनवग्ग, विचार वग्ग तथा निब्बानवग्ग से परिचित हो सकेंगे।

**CO-2** वे विमतिच्छेदनपञ्हो तथा बुद्धवग्ग से परिचित हो सकेंगे।

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (अद्धानवग्ग) |
| II | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (विचारवग्ग) |
| III | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (निब्बानवग्ग); मिलिंदपञ्हो: विमतिच्छेदनपञ्हो (शास्त्री, पृष्ठ82-88) |
| IV | मिलिंदपञ्हो: विमतिच्छेदनपञ्हो (बुद्धवग्ग)b |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, मिलिंदपञ्हपालि,बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
वाडेकर, आर० डी०, मिलिंदपञ्हो, मुम्बई विद्यापीठ, २०११।

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| **PAL-405F** | ***कोर्स 14 -*** **व्याकरण एवं निबन्ध** | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठक्रम के अध्ययन से छात्र पालि–व्याकरण का विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।*

**CO-2** *इसके द्वारा उन्हें पालि भाषा के संज्ञा पदों एवं समास का सम्यक् ज्ञान हो सकेगा।*

**CO-3** *पालि महाव्याकरण के प्रथम पॉच अभ्यासों के द्वारा वे पालि भाषा के प्रायोगिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे।*

| **Unit / इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | नामप्पकरण (बालावतार ) |
| **II** | *सन्धि*प्पकरण (बालावतार) |
| **III** | समासप्पकरण (बालावतार) |
| **IV** | *कारक*प्पकरण (बालावतार) |
| **V** | *पालि निबन्ध* |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


काशयप, भिक्षु जगदीश, पालि महाव्याकरण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००८ (पुनर्मुद्रण)।
काशयप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, २०१७ (पुनर्मुद्रण)।
लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३।
शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६।
शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, १९९३।
Buddhadatta, A. P. *Aids to PAL-Conversation and Translation,* P. M. W. Piyaratana, AmbalanGoda


***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| PAL- 406F | *कोर्स 15* – पालि अभिधम्म– I | *क्रेडिट 04* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र अभिधर्म के इतिहास, अभिधर्मापिटक की विषय–वस्तु, और परमार्थ धर्म से परिचित हो सकेंगे।*

**CO-2** *इससे छात्र चित्तसंगहो के अन्तर्गत कामावचर, रूपावचर अरूपावचर एवं लोकोत्तर स्वरूपों हो सकेंगे।*

| Unit /इकाई | Topics /पाठ्य विषय |
|---|---|
| **I** | अभिधर्म का इतिहास, अभिधर्म पिटक की विषयवस्तु, परमार्थ धर्म। |
| **II** | अभिधम्मत्थसङ्गहो: चित्तसंगहो- कामावचर एवं रूपावचर |
| **III** | अभिधम्मत्थसङ्गहो: चित्तसंगहो- अरूपावचर एवं लोकोत्तर |
| **IV** | अभिधम्मत्थसङ्गहो: चेतसिकसंगहो |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

कोसम्बि, धम्मानन्द,*अभिधम्मत्थसंगहो नवनीतटीका*, बुद्धिस्ट वर्ल्ड प्रेस, दिल्ली, २०१७।
कौसल्यायन, भदन्त, अभिधम्मत्थसंगहो, सम्यक् प्रकाशन, २०१३ (पुनर्मुद्रण)
त्रिपाठी, रामशंकर, अभिधम्मत्थ-संगहो, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९९२
Bodhi, B. (2000). *A Comprehensive Manual of Abhidhamma*. USA: BPS Pariyatti Edition

***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| **PAL-407F** | ***कोर्स 16*** - पालि अभिधम्म– **II** | ***क्रेडिट 04*** |

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र प्रेतसिक सम्पयोगनय, रूप एवं निब्बान से परिचित हो सकेंगे।*

**CO-2** *इससे छात्र चित्तवीथियों के अन्तर्गत पंचद्वारवीथि और मनोद्वार–वीथि से परिचित हो सकेंगे।*

| Unit / इकाई | Topics /पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | अभिधम्मत्थसङ्गहो: चेतसिकसम्पयोगनयो |
| II | अभिधम्मत्थसङ्गहो: रूप |
| III | अभिधम्मत्थसङ्गहो: निब्बान |
| IV | चित्त वीथि: पंचद्वारवीथि और मनोद्वारवीथि |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुतग्रंथ-


कोसम्बि, धम्मानन्द,*अभिधम्मत्थसंगहो नवनीतटीका*, बुद्धिस्ट वर्ल्ड प्रेस, दिल्ली, २०१७।

कौसल्यायन, भदन्त, अभिधम्मत्थसंगहो, सम्यक् प्रकाशन, २०१३ (पुनर्मुद्रण)

त्रिपाठी, रामशंकर, अभिधम्मत्थ-संगहो, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९९२

Bodhi, B. (2000). *A Comprehensive Manual of Abhidhamma*. USA: BPS Pariyatti Edition


***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| **PAL-408F** | *कोर्स 17* विसुद्धधम्म– I | *क्रेडिट 04* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* विसुद्धिमग्गो के अन्तर्गत निदानादिकथा, सीलस्वरूपावादिकथा, सीलनिसंस तथा सीलनिसंस तथा पातिपोक्ख संवरसील से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे।

| Unit /इकाई | Topics /पाठ्य विषय |
|---|---|
| **I** | सीलनिद्देसो: निदानादिकथा (शास्त्री, पृ॰ 03-10) |
| **II** | सीलनिद्देसो: सीलसरूपादिकथा (शास्त्री, पृ॰ 11-14) |
| **III** | सीलनिद्देसो: सीलानिसंसं (शास्त्री, पृ॰ 14-17) |
| **IV** | सीलनिद्देसो: पातिमोक्खसंवरसीलं (शास्त्री, पृ॰ 25-30) |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, विसुद्धिमग्ग, प्रथम भाग, बौद्ध भारती प्रकाशन, २००९।

Kumar, B. (2021). Visuddhimaggacullaṭikā: Saṅkhepatthajotanī. Delhi: Eastern Book Linkers.

Kosambi, D. (1999).*Visuddhimaaga of Buddhaghosācariya.* Delhi: Motilal Banarsidass (Reprint)

Ñaṇamoli, B.(2003).The Path of Purification. Kandy:Buddhist Publication Society (Reprint)

***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| PAL-409F | ***कोर्स 18*** विसुद्धधम्म– II | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* सीलनिद्देसो के अन्तर्गत इन्द्रियसंवरसीलं *तथा* पच्चयसन्निस्सितसीलं *से सम्यक् परिचित हो सकेंगे।*

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| **I** | सीलनिद्देसो: इन्द्रियसंवरसीलं (शास्त्री, पृ॰ 30-33) |
| **II** | सीलनिद्देसो: इन्द्रियसंवरसीलं [परिच्छेद ३० पर्यन्त] (शास्त्री, पृ॰ 34-40) |
| **III** | सीलनिद्देसो: इन्द्रियसंवरसीलं (शास्त्री, पृ॰ 40-45) |
| **IV** | सीलनिद्देसो: पच्चयसन्निस्सितसीलं (शास्त्री, पृ॰ 45-52) |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, विसुद्धिमग्ग, प्रथम भाग, बौद्ध भारती प्रकाशन, २००५।

Kumar, B. (2021). Visuddhimaggacullaṭikā: Saṅkhepatthajotanī. Delhi: Eastern Book Linkers.

Kosambi, D. (1999).*Visuddhimaaga of Buddhaghosācariya.* Delhi: Motilal Banarsidass (Reprint)

Ñaṇamoli, B.(2003).The Path of Purification. Kandy:Buddhist Publication Society (Reprint)

***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| **PAL-410F** | ***कोर्स 19*** - पालि दार्शनिक प्रस्थान | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र बौद्ध* दर्शन का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

**CO-2** इससे वैभाषिक एवं सौत्रान्त्रिक सम्प्रदायों उनके आचार्यें से भी परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र आध्यमिक दर्शन के विशिष्ट आचार्यों एवं शून्यवाद से भी परिचित हो सकेंगे।

| Unit/इकाई | Topics/पाठ्य विषय |
|---|---|
| **I** | शून्यवाद , त्रिकाय: स्थविरवादी और सर्वास्तिवादी मत |
| **II** | वैभाषिक सम्प्रदाय और साहित्य का विकास |
| **III** | सौत्रांत्रिक दर्शन: बाह्यार्थ की सत्ता और अनुमेयता |
| **IV** | वैभाषिक और सौत्रांत्रिक मत के विभिन्न आचार्य |

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।

उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।

पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।

त्रिपाठी, रामशंकर, सौत्रांत्रिक दर्शन, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००८।

Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)


***

# UG Honors With Research

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| PAL-401F | ***कोर्स 10*** - थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– I | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes:** अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र चारों* बौद्ध संगीतियों एवं उनके निष्कर्षों से परिचित हो सकेंगे।

**CO-2** इससे छात्र स्थविरवाद और महासांधिक से परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म के अवदान से परिचित हो सकेंगे।

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | प्रथम एवं द्वितीय बौद्ध संगीति |
| II | बौद्ध निकाय (सम्प्रदाय): स्थविरवाद और महासांघिक |
| III | सम्राट अशोक और तृतीय बौद्ध संगीति |
| IV | श्रीलंका में चतुर्थ बौद्ध संगीति और तिपिटक का संकलन |

सतत मूल्यांकन-

4. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
5. अधिन्यास (Assignment) कार्य
6. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


बापट, पी॰बी॰, बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, प्रकाशन विभाग, 1956, दिल्ली।

Bareau André. (2013). *The Buddhist Schools of Small Vehicle*. London: The Buddhist Society Trust.

Bapat P. B. (1956). *2500 Years of Buddhism*. New Delhi: Publication Division, Govt. of India.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Kumar, B. (2019). *Dīpavaṃso*. Delhi: Buddhist World Press.

Kumar B. & Kumar U. (2021). *Saṅgītiyavaṃso*.Delhi: Aditya Prakashan.

Silva, Lily De. "The Paritta Ceremony of Sri Lanka: Its Antiquity and Symbolism." In Buddhist Thought & Culture, by David J. Kalupahana, 139-150. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, 2001.


***

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| **PAL-402F** | ***कोर्स 11-*** **थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– II** | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* बौद्ध धर्म के श्रीलंका , म्यांमार, थाईलैण्ड, कम्बोडिया और लाओस में प्रचार–प्रसार से परिचित हो सकेंगे।

**CO-2** इससे छात्र पालि के वंस साहित्य से परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र दक्षिण और दक्षिणपूर्व बौद्ध देशों के समारोहों, उपोसथ आदि से परिचित हो सकेंगें।

| **Unit /इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| I | थेरवाद बौद्ध धर्म का श्रीलंका, म्यांमार, और थाईलैंड में प्रचार और प्रसार |
| II | थेरवाद बौद्ध धर्म का कम्बोडिया, और लाओस में प्रचार और प्रसार |
| III | पालि वंस साहित्य का परिचय |
| IV | दक्षिण और दक्षिण-पूर्व बौद्ध देशों में समारोह (Ceremonies): परित्राण पाठ, उपोसथ, इत्यादि। |

सतत मूल्यांकन-

4. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
5- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
6- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुतग्रंथ-


बापट, पी॰बी॰, बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, प्रकाशन विभाग, 1956, दिल्ली।

Bareau André. (2013). *The Buddhist Schools of Small Vehicle*. London: The Buddhist Society Trust.

Bapat P. B. (1956). *2500 Years of Buddhism*. New Delhi: Publication Division, Govt. of India.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Kumar, B. (2019). *Dīpavaṃso*. Delhi: Buddhist World Press.

Kumar B. & Kumar U. (2021). *Saṅgītiyavaṃso*.Delhi: Aditya Prakashan.

Silva, Lily De. "The Paritta Ceremony of Sri Lanka: Its Antiquity and Symbolism." In Buddhist Thought & Culture, by David J. Kalupahana, 139-150. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, 2001.


***

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| PAL-403F | ***कोर्स 12*** - द्वितीय प्रश्न पत्र – मिलिंदपञ्हो - I | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संवाद शैली में* बौद्ध दर्शन के तत्वों को जानने में समर्थ होंगे।

**CO-2** इससे बाहिर–कथा के विभिन्न सोपानों से परिचित हो सकेंगे।

**CO-3** इससे छात्र लक्खणपञ्हो के अन्तर्गत महावग्ग से परिचित हो सकेंगे।

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 01-09) |
| II | मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 10-17) |
| III | मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 18-28) |
| IV | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (महावग्ग) |

सतत मूल्यांकन-

4. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
5. अधिन्यास (Assignment) कार्य
6. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, मिलिंदपञ्हपालि,बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
वाडेकर, आर॰ डी॰, मिलिंदपञ्हो, मुम्बई विद्यापीठ, २०११।

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| PAL-404F | ***कोर्स 13 -*** द्वितीय प्रश्न पत्र - मिलिंदपञ्हो - II | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र लक्खणपञ्हो के अन्तर्गत अद्धनवग्ग, विचार वग्ग तथा निब्बानवग्ग से परिचित हो सकेंगे।

**CO-2** वे विमतिच्छेदनपञ्हो तथा बुद्धवग्ग से परिचित हो सकेंगे।

| Unit / इकाई | Topics / पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (अद्धानवग्ग) |
| II | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (विचारवग्ग) |
| III | मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (निब्बानवग्ग); मिलिंदपञ्हो: विमतिच्छेदनपञ्हो (शास्त्री, पृष्ठ82-88) |
| IV | मिलिंदपञ्हो: विमतिच्छेदनपञ्हो (बुद्धवग्ग)b |

सतत मूल्यांकन-

4. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
5- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
6- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, मिलिंदपञ्हपालि,बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
वाडेकर, आर० डी०, मिलिंदपञ्हो, मुम्बई विद्यापीठ, २०११।

| Year: Fourth | | Semester: VII |
|---|---|---|
| **PAL-405F** | ***कोर्स 14 -*** **व्याकरण एवं निबन्ध** | ***क्रेडिट 04*** |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठक्रम के अध्ययन से छात्र पालि–व्याकरण का विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।*

**CO-2** *इसके द्वारा उन्हें पालि भाषा के संज्ञा पदों एवं समास का सम्यक् ज्ञान हो सकेगा।*

**CO-3** *पालि महाव्याकरण के प्रथम पॉच अभ्यासों के द्वारा वे पालि भाषा के प्रायोगिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे।*

| **Unit / इकाई** | **Topics / पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | नामप्पकरण (बालावतार ) |
| **II** | *सन्धि*प्पकरण (बालावतार) |
| **III** | समासप्पकरण (बालावतार) |
| **IV** | *कारक*प्पकरण (बालावतार) |
| **V** | *पालि निबन्ध* |

सतत मूल्यांकन-

4. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
5. अधिन्यास (Assignment) कार्य
6. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-


काशयप, भिक्षु जगदीश, पालि महाव्याकरण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००८ (पुनर्मुद्रण)।
काशयप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, २०१७ (पुनर्मुद्रण)।
लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३।
शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६।
शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, १९९३।
Buddhadatta, A. P. *Aids to PAL-Conversation and Translation,* P. M. W. Piyaratana, AmbalanGoda


***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| PAL-406F | *कोर्स 15-* पालि विज्ञान | *क्रेडिट 04* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पालि विज्ञान* के विशिष्ट ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

**CO-2** इससे छात्र विज्ञानवादी अचार्यों , क्लिवर मनोविज्ञान एवं आलय विज्ञान से परिचित हो सकेंगे।

| Unit/इकाई | Topics/पाठ्य विषय |
|---|---|
| I | विज्ञानवाद के आचार्य: मैत्रेयनाथ, वसुबंधु, असंग, स्थिरमति, दिङनाग, धर्मपाल और धर्मकीर्ति। |
| II | विज्ञानवाद: विज्ञान के प्रभेद, क्लिष्ट मनोविज्ञान, और आलय विज्ञान। |
| III | माध्यमिक दर्शन के आचार्य: नागार्जुन, आर्यदेव, चंद्रकीर्ति, शान्तिदेव, और शान्तरक्षित। |
| IV | दशभूमि-शास्त्र में दस भूमियाँ, त्रिकाय का विकास, महायान में त्रिकाय व्यवस्था |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।

उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।

कृष्णनाथ, बौद्ध निबन्धावली, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, १९९७।

तेनजिन, पेमा, महायानसंग्रहः, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २०१२।

तेनजिन, पेमा, मध्यमकावतार एवं भाष्य (छठा चित्तोत्पाद), केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,सारनाथ, वाराणसी, २०१६।

पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।

लामा, दलाई, बौद्ध सिद्धान्त सार, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००५।

Chatterjee, A. K. (1975). *The Yogācāra Idealism*. Delhi: Motilal Banarsidass. (Reprint)

Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Pandey, G. C. (2010), Studies in Mahāyāna, Sarnath: Central University of Tibetan Studies.

Silk, J. A. (2005). What, If Anything, Is Mahāyāna Buddhism?. *Buddhism: The origins and nature of Mahāyāna Buddhism; Some Mahāyāna religious topics*, *3*, 383.

Sharma, T. R. (1993).*Vijñaptimātratāsiddhi: Vimśatikā*. Delhi: Eastern Book Linkers.

Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)


***

| Year: Fourth | | Semester: VIII |
|---|---|---|
| PAL-407F | *कोर्स 16 -* घम्मसंगणि | *क्रेडिट 04* |

**Course outcomes**: अधिगम उपलब्धि-

**CO-1** *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पालि विज्ञान* के विशिष्ट ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

| **Unit/इकाई** | **Topics/पाठ्य विषय** |
|---|---|
| **I** | मातिका |
| **II** | चित्तुप्पादकण्ड |
| **III** | रूपकण्ड |
| **IV** | निक्खेपककण्ड |

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-


उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।

उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।

कृष्णनाथ, बौद्ध निबन्धावली, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, १९९७।

तेनजिन, पेमा, महायानसंग्रहः, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २०१२।

तेनजिन, पेमा, मध्यमकावतार एवं भाष्य (छठा चित्तोत्पाद), केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,सारनाथ, वाराणसी, २०१६।

पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।

लामा, दलाई, बौद्ध सिद्धान्त सार, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००५।

Chatterjee, A. K. (1975). *The Yogācāra Idealism*. Delhi: Motilal Banarsidass. (Reprint)

Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Pandey, G. C. (2010), Studies in Mahāyāna, Sarnath: Central University of Tibetan Studies.

Silk, J. A. (2005). What, If Anything, Is Mahāyāna Buddhism?. *Buddhism: The origins and nature of Mahāyāna Buddhism; Some Mahāyāna religious topics*, *3*, 383.

Sharma, T. R. (1993).*Vijñaptimātratāsiddhi: Vimśatikā*. Delhi: Eastern Book Linkers.

Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)


***